# अरुण कमल : नए इलाके का प्रतिबद्ध प्रहरी

*"मुक्ति न भी मिले तो बना रहे मुक्ति का स्वप्न*
*बदले न भी जीवन तो जीवित बचे बदलने का यत्न।"* (पुतली में संसार, पृ. 25)

समकालीन परिदृश्य खासकर 1980 के बाद जिन रचनाकारों की उपस्थिति ने हिंदी कविता खासकर कविता में नायक की जगह चरित्र के आने और उसके छोटे-छोटे अनुभवों से जुड़ने से लेकर ट्रूथ के पोस्ट ट्रुथ बनने तक के काव्यात्मक सफर में अपनी रचनाशीलता से उसे नया स्वर प्रदान किया है उनमें राजेश जोशी, उदय प्रकाश, लीलाधर जगूड़ी, विष्णु खरे, मंगलेश डबराल जैसे अनेक बहुप्रसिद्ध कवियों के साथ बहुचर्चित कवि एवं आलोचक अरुण कमल का नाम भी उल्लेखनीय है। 1980 के बाद न केवल हिंदी कविता की सृजनशीलता में काफी बदलाव आया है अपितु समाज में जैसे-जैसे अर्थ और तकनीक का बोलबाला बढ़ा है शहरीकरण, बाजार एवं उपभोक्तावाद के रूप में एक सर्वग्रासी मूल्यहीनता ज्यादा विकराल हुई है। यही वह समय था जब एक ओर धूमिल की यह बात गूँज रही थी कि *"जब कविता न लोक बन सकती है न लोग/ तब तुम ही कहो की/ इस ससुरी कविता का क्या करें"* तो दूसरी ओर कविता का अंत और कविता की वापसी के बहाने विचारधारा के बरक्स काव्यानुभव की स्वायत्तता पर गंभीर बहस होने लगी थी। 1980-81 में ही अनेक पुराने एवं नए कवियों के साथ अरुण कमल का पहला काव्य संग्रह भी प्रकाशित हुआ जिससे समकालीन हिंदी कविता की स्थापनाओं के निर्माण को मजबूत आधार मिला और कविता परंपरागत काव्य मुहावरों से मुक्त होकर सच्चे अर्थों में आमजन, निम्नजन, प्रकृति, परिवार एवं जीवन के छोटे छोटे अनुभवों से जुड़ती चली गयी। अरुण कमल ने अपनी कविताओं के माध्यम से न केवल समकालीन कवियों में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई बल्कि पहले से विकसित प्रगतिशील यथार्थवादी काव्य परंपरा को आगे बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनकी प्रगतिशीलता की प्रमुख विशेषता यह है कि वे प्रगतिशीलता को अपनाते हुए भी उसके राजनीतिकरण में नहीं पड़ते हैं। इसलिए अरुण कमल जैसा कवि ही जैसा की 'कविता का अर्थात' में परमानंद श्रीवास्तव लिखते हैं--"एक बार फिर कविता में जीवन की नई आंच, नई उष्मा, नई गतिविधि, नई ताजगी, नए नैतिक बोध के साथ जीवन-मृत्यु-प्रकृति-प्रेम-राग-विराग-हिंसा-बाजार के अछूते प्रसंगों को उद्घाटित करते हुए संभव कर सकता है। सिर्फ त्रासद समय में भी कुछ सार्थक बचा लेने की कोशिश के बल पर ही उनकी कविता का ताप कायम है।"[1]

अपने समय एवं समाज के प्रति जागरुक कवि अरुण कमल की कविता हलांकि अनुभव के तमाम आयामों को समेटे हुए है लेकिन वे मुख्य रूप से संघर्षशील मनुष्य की आशा, निराशा एवं उसके कारणों का चित्रण करने वाले कवि हैं। उनके यहाँ शोषणमूलक समाज व्यवस्था के ख़िलाफ आक्रोश एवं नफरत के साथ-साथ एक नई मानवीय व्यवस्था के निर्माण कि व्याकुलता भी दिखाई देती है। अपने समय के लोगों के साथ चलते हुए कवि ने जो कुछ अनुभव किया है, जिन विपरित परिस्थितियों को भोगा है उसी की अभिव्यक्ति उनकी कविताओं में हुई है। वे उन स्थितियों, घटनाओं या अनुभव के आधार पर ही कविता रचते हैं जिसका संबंध उनके खुद के और जनसामान्य के साझे अनुभव से निर्मित होता है।

---

नीरज : युवा आलोचक। एकाधिक पुस्तकें।
314, कनिष्क अपार्टमेंट्स, सी एंड डी ब्लॉक शालीमार बाग, दिल्ली-110088
मो. : 9868074669, 9910560552